गुनगुनी धूप

डॉ॰. पूजा कौशिक

गुनगुनी धूप

लेखिका: डॉ० पूजा कौशिक

प्रथम संस्करणः 2024

सर्वाधिकारः अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (आई.सी.ई.आर.टी)

आईएसबीएन: 978-93-95789-73-8

मूल्य: ₹200

अस्वीकरण

इस पुस्तक में संकलित सामग्री के लिए लेखक पूरी तरह जिम्मेदार है। प्रकाशक और संपादक इसके लिए किसी भी तरह से जिम्मेवार नहीं हैं, त्रुटियाँ, यदि कोई हों, पूरी तरह से अनजाने में हैं और पाठकों से अनुरोध है कि भविष्य में विसंगतियों से बचने के लिए संपादक या प्रकाशक को ऐसी त्रुटियों के बारे में सूचित करें।

प्रकाशक और मुद्रक

अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (आई.सी.ई.आर.टी)

www.icert.org.in

Email: icertpitara@icert.org.in, info@icert.org.in

समर्पण

यह पुस्तक भारत के हर उस बालक को समर्पित है जो मेरे प्यारे देश भारत को एक बार फिर से विश्वगुरु के पद पर देखने की भावना रखता है, साथ ही मेरे घर-आँगन में अपनी मनभावन अठखेलियों से मेरे भीतर के बालक को जीवित रखने वाले मेरे बच्चों को भी मैं ये पुस्तक समर्पित करती हूँ इस विशवास के साथ कि वे राष्ट्रनिर्माण में मील का पत्थर साबित होंगे और अपने राष्ट्रधर्म को ही सर्वोपरी मानकर इस आन ,बान और शान की रक्षा करेंगे।

डॉ० पूजा कौशिक

लेखिका

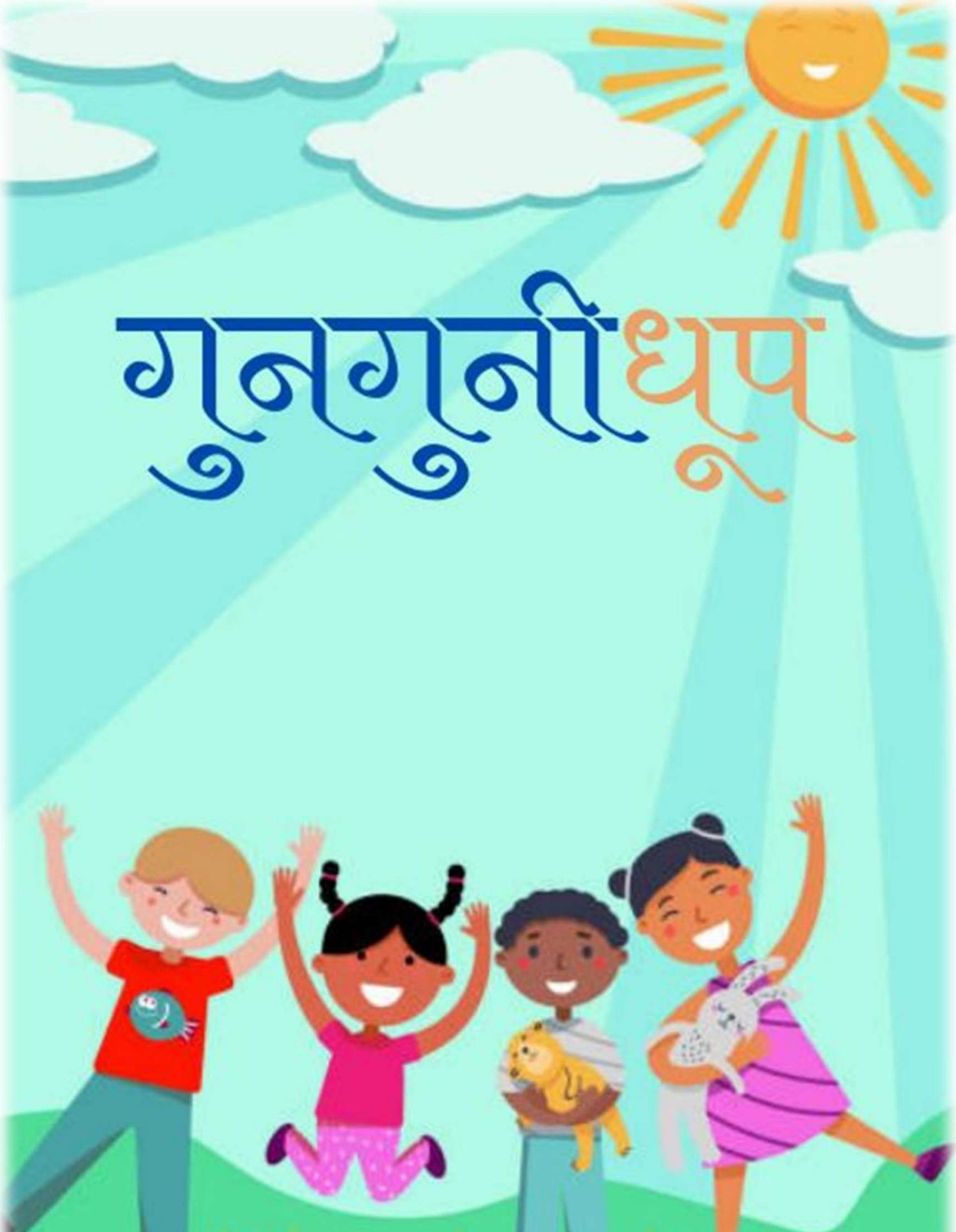
गुनगुनी धूप

आत्मकथ्य

जाड़ों में जो आनंद गुनगुनी धूप का है वही आनंद अनुभव करते है घर और विद्यालयों के बीच दौड़ते, मन में भविष्य के सपनों की गर्माहट लिए वे किशोर-किशोरी जिन्होंने बचपन की दहलीज़ तो पार कर ली है किन्तु अभी साफ़-साफ़ भविष्य का मार्ग देख पाने में समर्थ नहीं हैं । इन्हें इंतज़ार है तो कोहरे के छंटने का या कहें जाड़ों में तन को ही नहीं मन को भी अपनी आंचरहित गर्माहट से सराबोर कर देने वाली 'गुनगुनी धूप' का । हम सभी जानते हैं किसी भी पौधे के संवर्धन में धूप का अपना ही महत्त्व होता है किन्तु यह ध्यान रखना भी आवश्यक है कि वह धूप इतनी भी तेज़ ना हो कि किसी पुष्प को झुलसने पर मजबूर कर दे । इस पुस्तक के माध्यम से मेरा ये प्रयास है कि किशोरावस्था में कदम रख रहे ऐसे बच्चों को जीवन के अनुभव से मैंने जो कुछ सीखा है उनसे साझा कर सकूं या एक मार्ग दिखा सकूं । कवितायें विशेष रूप से हास्य व्यंग्य की कवितायें बच्चों तक अपनी बात पहुँचाने का सर्वाधिक सहज और प्रभावी माध्यम है । इन कविताओं के माध्यम से ही बच्चों में राष्ट्रप्रेम की भावना का विस्तार किया जा सकता है तो वहीँ दूसरी ओर ये कवितायें उनमें हास्य व्यंग्य के माध्यम से समाज में घटित सही गलत की पहचान करवाने में भी कारगर सिद्ध होती है । ये कविताएँ तो बच्चों में मात्र एक बीज अंकुरण का कार्य करेंगी जिसका पोषण करेगी वो **'गुनगुनी धूप'** जो उनके संवर्धन में सहायक सिद्ध होगी । यही गुनगुनी धूप जो संस्कार रूप में हम बड़ों से इन बच्चों को मिलेगी सही मायने में इस बात को निर्धारित करेगी कि आने वाले कल में किस पौधे पर कैसे पुष्प खिलेंगे और कौनसा वृक्ष कितना छायादार और फलदार सिद्ध होगा । मैं यह भी आशा करती हूँ कि मेरी ये कवितायें पाठकों को अवश्य ही पसंद आएँगी और छात्रों के लिए लाभप्रद भी सिद्ध होंगी ।

डॉ० पूजा कौशिक

लेखिका

विषय सूची

मर्यादा पुरषोत्तम राम	8
अमर जवान ज्योति	9
हिंदी भाषा	10
भारत का संविधान	11
हिंदी ....माँ के जैसी	13
भारत मेरी शान	14
सैनिकों को सलाम	15
माँ	16
कहाँ गए आदर्श	17
यमराज का चालान	20
खुश होती हूं	23
सावधान	24
झांसी की वीरांगना	26
कन्या भ्रूण : एक पुकार	27

नव संवत	**28**
वीर सिपाही	**29**
गुरु की महिमा	**30**
नारी का बदलता स्वरुप	**31**
नया ज़माना	**32**
रावण का इंटरव्यू	**34**
भानुमती का पिटारा	**36**
नारी तुम शक्ति स्वरूपा हो	**38**
शब्द	**39**
संस्कार	**41**
स्वाभिमान	**42**
हैप्पी न्यू ईयर	**43**
घनघोर अँधेरा है	**45**
ख़ुशी	**46**
अन्नमान	**47**